क्या आपके आध्यात्मिक नेत्र खुले हैं?

जब बाइबल दिल की बात करती है, तो इसका अर्थ हमारे छाती में स्थित अंग से नहीं है जो रक्त पंप करता है। बल्कि यह हमारे अंदरूनी व्यक्ति — हमारी आत्मा — के बारे में है।

“तुम्हारे समझने वाले नेत्र प्रबुद्ध हों, ताकि तुम जान सको
कि उसकी बुलाहट की आशा क्या है, और संतों में उसकी विरासत की महिमा के धन क्या हैं।”
(इफिसियों 1:18)

यह कहता है “तुम्हारे हृदय के नेत्र।” शारीरिक हृदय में नेत्र नहीं हो सकते; इसलिए यह वचन कुछ आध्यात्मिक — हमारे आध्यात्मिक व्यक्ति — के बारे में बोलता है।

हमारी आत्माएँ हमारे शारीरिक शरीर के समान हैं — उनमें नेत्र, कान, हाथ और पैर होते हैं। वे देख सकते हैं, सुन सकते हैं, खा सकते हैं, और यदि उन्हें जीवन न देने वाले वातावरण में रखा जाए तो मर भी सकते हैं।

आध्यात्मिक रूप से अंधा वह है जिसका आध्यात्मिक नेत्र नहीं देख सकता।

लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि वह स्वर्गदूत, राक्षस, या दृष्टियां नहीं देख सकता। नहीं! इसका मतलब है कि वह परमेश्वर के वचन को नहीं समझता।

जो व्यक्ति वचन को नहीं समझता, उसके लिए यह शक्तिहीन और अर्थहीन हो जाता है। जैसे आप किसी किताब को पढ़ते हैं जिसे आप समझ नहीं पाते, वैसे ही बाइबल भी बिना समझ के केवल एक किताब बनकर रह जाती है।

समझना इसका अर्थ है कि आप यह पहचानें कि जो आप पढ़ रहे हैं उसका आज के जीवन में क्या प्रयोजन और प्रयोग है।

एम्माऊस के रास्ते पर दो शिष्यों की कहानी

आइए हम शास्त्रों की ओर देखें और जानें कि हमारे आध्यात्मिक नेत्र खुलने का क्या अर्थ है।

यीशु के मृतकों में से उठने के दिन, दो शिष्य एम्माऊस नामक गाँव जा रहे थे, और मार्ग में यीशु स्वयं उनके साथ हो गए, लेकिन उन्होंने उन्हें नहीं पहचाना।

“अब देखो, उसी दिन उनमें से दो एम्माऊस नामक गाँव जा रहे थे,
जो यरूशलेम से लगभग सात मील दूर था। और वे इन सभी बातों पर चर्चा कर रहे थे जो हुई थीं। और यह हुआ, जब वे बातचीत और
विचार कर रहे थे, तो यीशु स्वयं उनके पास आए और उनके साथ चलने लगे। पर उनके नेत्र बंधे हुए थे, ताकि वे उसे न जान पाएं।”
(लूका 24:13–16)

यीशु ने उनसे पूछा कि वे क्या चर्चा कर रहे हैं। उन्होंने उन्हें अपने क्रूस पर चढ़ाए जाने के बारे में बताया, यह न जानते हुए कि यह वही हैं।

“पर हम आशा कर रहे थे कि वही इस्राएल को उद्धार देने वाला
है। वास्तव में, इसके अलावा, आज तीसरा दिन है जब यह सब हुआ।” (लूका 24:21)

तब यीशु ने कहा:

“हे मूर्खों, और जो हृदय में धीमे हैं, उन सब बातों पर विश्वास करने के लिए जो भविष्यद्वक्ताओं ने कही! क्या मसीह को यह सब भुगतना और अपनी महिमा में प्रवेश करना नहीं चाहिए

था?”
(लूका 24:25–26)

और मोसेस और सभी भविष्यद्वक्ताओं से शुरू करते हुए, उन्होंने उन्हें अपने बारे में सभी शास्त्रों की व्याख्या की।

जब वे गाँव पहुँचे, उन्होंने उन्हें रोकने के लिए कहा। और जब उन्होंने उनके साथ भोजन किया, यीशु ने रोटी ली, आशीर्वाद दिया, तोड़ा और उन्हें दी — और तुरंत:

“तब उनके नेत्र खुले और उन्होंने उसे पहचाना; और वह उनकी दृष्टि से अदृश्य हो गया। और उन्होंने आपस में कहा, ‘क्या हमारे हृदय नहीं जलते थे जब वह हमारे साथ मार्ग पर बातें कर रहा था, और जब उसने हमें शास्त्र खोले?’”
(लूका 24:31–32)

ध्यान दें — जब तक यीशु शास्त्र समझा रहे थे, तब तक वे पूरी तरह नहीं समझ पाए। लेकिन जब उन्होंने रोटी तोड़ी, तो उनकी समझ खुल गई, और अचानक जो कुछ उन्होंने सिखाया था, सब स्पष्ट हो गया।

पहले उनके आध्यात्मिक नेत्र (वचन की समझ) खुले — फिर उनके शारीरिक नेत्र ने उन्हें पहचाना।

शास्त्रों को समझना आध्यात्मिक नेत्र खोलता है

योहन्ना की गॉस्पेल में पुष्टि है:

“परन्तु उन्होंने उनके सामने इतने चिह्न किए, तब भी वे उस पर विश्वास नहीं कर सके, ताकि इसायाह भविष्यद्वक्ता का वचन
पूरा हो, जो उसने कहा: ‘प्रभु, किसने हमारे शब्दों पर
विश्वास किया? और प्रभु की बाँह किसको प्रकट हुई?’ इसलिए वे विश्वास नहीं कर सके, क्योंकि इसायाह ने कहा: ‘मैंने उनके
नेत्र अंधा किए और उनके हृदय कठोर किए, ताकि वे अपनी आँखों
से न देखें, ताकि वे अपने हृदय से न समझें और लौटें, ताकि मैं उन्हें चंगा कर सकूँ।’”
(योहन्ना 12:37–40)

इसलिए, आध्यात्मिक नेत्र खुलना राक्षस, जादूगर, या भविष्यदर्शी दृष्टियां देखने के बारे में नहीं है।

इसके बजाय, इसका अर्थ है कि आप समझें:

यीशु क्यों आए,
वह आज क्या चाहते हैं,
वे आज कहाँ हैं,
और उनकी इच्छा में कैसे चलना है।

“फिर उसने उन्हें कहा, ‘ये वे बातें हैं जो मैंने तुम्हारे
साथ रहते हुए तुम्हें कही थी, कि मोसेस के नियम, भविष्यद्वक्ताओं और भजनों में जो मेरे बारे में लिखा गया
था, सब पूरा होना चाहिए। और उसने उनकी समझ खोली, ताकि वे शास्त्रों को समझ सकें।’”
(लूका 24:44–45)

सच्चा आध्यात्मिक अंधापन

एक हत्यारा, व्यभिचारी, या जो अनुचित कपड़े पहनता है, वह अंधा ही है — चाहे वह कितनी भी दृष्टियां देखे या भविष्यवाणियाँ करे।

आध्यात्मिक नेत्र कैसे खोले जाएँ?

1. यह स्वीकार करें कि आप पापी हैं, खुद को विनम्र बनाएं, और ईश्वर से दया और क्षमा मांगें।
2. उनका आदेश मानकर सच्चे बपतिस्मा में यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा लें।

3. पवित्र आत्मा प्राप्त करें।

पवित्र आत्मा हमारे आध्यात्मिक नेत्र खोलता है और हमें शास्त्रों को समझने में सक्षम बनाता है।

इसके बिना, हम कभी परमेश्वर को वास्तव में नहीं जान सकते।

भगवान आपको आशीर्वाद दें और आपके हृदय के नेत्र खोलें।

Share on:
WhatsApp